भारत पुनः बनेगा विश्व का आध्यात्मिक गुरू-नेडा

आबू रोड़, ४ अक्टूबर। कलियुग में अध्यात्म की जरूरतें इसलिए बढ़ जाती है क्योंकि तनाव और अपराध का धनत्व पहले के अपेक्षा अपनी चरम पर हो जाता है। अध्यात्म से ओत-प्रोत भारत प्राचीन काल से ही विश्व को नयी दशा और दिशा प्रदान करता रहा है। अब वक्त आ गया है जब भारत पुनः विश्व गुरू बन लोगों का मार्गदर्शन करेगा। उक्त उद्गार हिमाचल प्रदेश सरकार के सूचना और तकनीकी मंत्री जगत प्रसाद नेडा ने व्यक्त किये। वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में भारत सहित विदेशों से आये लोगों को सम्बोधित कर रहे थे। इस अन्तराष्ट्रीय महासम्मेलन में अमेरिका, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, लन्दन, अफ्रीका, नेपाल तथा भारत के कोने-कोने से सभी वर्गों से 15 सौ से ज्यादा सम्मेलानार्थी भाग ले रहे है।

आगे उन्होंने कहा कि जब हम आन्तरिक रूप से कमजोर हो तो स्थितियां और परिस्थितियां हमें प्रभावित करती है। परन्तु जब हम शक्तिशाली होते है तो तनाव और समस्यायें हमसे दूर चली जाती है। अध्यात्म तो बहुत लोग अपनाते है परन्तु जो आत्मसात् करता है वह शक्तिशाली बनकर दूसरों को बुराईयों के दलदल से बाहर निकालने में मदद करता है। देश तथा समाज में लगातार अपराध और बुराईयां बढ़ती जा रही है। इसके लिए संस्था द्वारा पूरे विश्व में आध्यात्मिक क्रान्ति में सम्मिलित होकर इससे दूर भगाना होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय महिलाओं द्वारा संचालित विश्व की सबसे बड़ी संस्था है। अपने जीवन के अनुभवों को बांटते हुए कहा कि जब हम राजयोग से जुड़ते है तो हमें स्वयं को नियंत्रित करने की क्षमता बढ़ जाती है। बढ़ रहे आतंकवाद और भ्रष्ट्राचार को अध्यात्म के जरिये ही रोका जा सकता है। माननीय मंत्री ने लोगों से अपील की कि वे इस आध्यात्मिक क्रान्ति में सम्मिलित होकर बढ़ रही आसुरी प्रवृत्तियों को समाप्त करने का संकल्प लें।

महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि दुनियां में अपने और पराये की खांई ने लोगों के अन्दर भेद पैदा किये है। जब तक हम अपने अन्दर भ्रातृत्व भाव को नहीं जगायेंगे तब तक विश्व शान्ति का सपना साकार नहीं होगा। जितना तेजी से भौतिक विकास हो रहा है उतना ही तेजी से अपराध भी बढ़ रहा है उसका मुख्य कारण नैतिक मूल्यों का पतन है। राजयोग की शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान से हमारे मन और आन्तरिक स्थिति में परिवर्तन आयेगा और एक मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में सहयोगी बन पायेंगे।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के लखनऊ बेन्च के न्यायमूर्ति श्याम नारायन शुक्ला ने कहा कि न्यायालय में कभी-कभी ऐसी घटनायें सामने आती है कि उसका निर्णय देना कठिन हो जाता है। उस दौरान परमेश्वर का सानिध्य हमें निर्णय देने में मदद करता है। हम छोटी-छोटी बातों को अनदेखा कर देते है जिससे बहुत बड़ी घटनायें हो जाती है और उसका गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इसलिए हमें अपने जीवन प्रणाली को संयम और अनुशासित बनाना चाहिए।

संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि आज लोगों के जीवन में असंतुष्टता और अविश्वास तेजी से बढ़ता जा रहा है। इसके लिए अपने अन्तर्मन में आध्यात्मिक शक्तियों को बढ़ाना होगा। टेन्शन को समाप्त करने के लिए अटेन्शन रखना होगा। ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वैर ने कहा कि इस महासम्मेलन का बढ़ते असामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना है।

लन्दन से आये पत्रकार तथा लेखक नेविल हांजकिन्सन ने कहा कि भारतीय संस्कृति में आज के बुराईयों को रोकने की क्षमता है। पश्चिमी देशों के लोग पुनः भारतीय संस्कृति को अपने जीवन में अपनाने लगे हैं। महासम्मेलन सचिव ब्र0 कु0 मृत्युंजय ने कहा कि मनुष्य के अन्दर विकृतियां, विकार, भय तेजी से अपना पांव पसारता जा रहा है इसको समाप्त करने के लिए अध्यात्मिकता को अपनाना होगा। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी ने उपस्थित समूह को ईश्वरानुभूति करायी तथा कार्यक्रम का संचालन ब्र0 कु0 शीलू ने किया। इस महासम्मेलन में शिक्षाविद, चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, मीडिया, न्यायविद, प्रशासक, वैज्ञानिक एवं अभियन्ता, समाजसेवी, ग्राम विकास तथा अन्य वर्गों से जुड़े लोग भाग ले रहे हैं।